निर्यात की तुलना में 2543.59 मिलियन रुपए के कच्चे चमड़ तथा खालों, बिना तैयार किये चमड़े और तैयार चमड़ा उत्पादों का आयात किया गया। इस प्रकार इन उत्पादों का आयात निर्यात का 6.7% है जिसका मुख्य कारण निर्यात बाजार की बढ़ती हुई मांग को पूरा करना था।

(घ) से (च) कृषि मंत्रालय 8वीं पचवर्षीय योजना के दौरान 10 करोड़ रुपए के परिव्यय से पशुशव उपयोगिता केन्द्रों तथा चर्म निस्त्कचन एककों की स्थापना के लिए राज्यों का सहायता देने की एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना क्रियान्वित कर रहा है।

खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग भी मृत पशुओं की खाल निकालने उनका उपयोग करने के लिए इन योजनाओं को क्रियान्वित कर रहा है। इस योजना के अंतर्गत उपकरण तथा मशीनरी निर्माण-कार्य के लिए 100% सहायता अनुदान दी जाती है और वैद्युत जल, ढुलाई तथा सफाई करने जैसी सुविधाओं के लिए आंशिक रूप से सहायता अनुदान प्रदान की जाती है।

निम्नकोटिकृत मृदा को उर्वर बनाने हेतु जीव-गतिकी

7148. **श्री सोमपाल**: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 8 अप्रैल, 1994 के "इकोनोमिक टाइम्स" में "बायोडाइनेमिक्स टू रिवाइज डीग्रेडिड साइल" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ओर दिलाया गया है ;

(ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने उसमें वर्णित प्राकृतिक उर्वरकों के माध्यम से कृषि-उत्पादन को बढ़ाने की विधियों के संबंध में कोई अध्ययन किया है, अथवा करने का विचार रखती है;

(ग) यदि हां, तो भारत के पर्यावरण के अनुकूल ऐसी विधियों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार द्वारा कौन-कौन से कदम उठाए जा रहे हैं ;

(घ) इनमें कौन-कौन से प्रयोग सरकार भारतीय परिस्थितियों के लिए उपयुक्त मानती है और इस संबंध में क्या ठोस कार्यवाही की जा रही है ; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविंद नेतराम) : (क) जी, हां।

(ख) से (ङ) न्यूजीलैंड में प्रचारित की जा रही बायोडाइनामिक कृषि तकनीकों का अध्ययन करने और भारतीय स्थितियों में इसकी व्यावहारिकता का पता लगाने के लिये कृषि वैज्ञानिकों का एक दल न्यूजीलैंड भेजने का प्रस्ताव है।

उच्च नस्ल के मवेशियों का समाप्त होना

7149. **श्री सोमपाल :**
श्री शारदा महन्ती :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में पाए जाने वाले मवेशियों विशेषकर गायों की कई परम्परागत नस्लें समाप्ति के कगार पर हैं अथवा समाप्त हो चुकी हैं ;

(ख) क्या आलमबादी, बिंगापुरी, खटियालों, पुल्लिकुल्लम और बांगुर नस्लें उस सूची में शामिल हैं ;

(ग) देश में इनके अतिरिक्त कितनी और ऐसी नस्लें हैं जिनका पूर्ण अथवा आंशिक ह्रास हो रहा है ;

(घ) क्या सरकार के पास सभी महत्वपूर्ण गोवंश नस्लों की सूची सहित ऐसा कोई रिकार्ड उपलब्ध है जिसमें उनकी विशेषताओं का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है ;

(ङ) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ;

(च) इन परम्परागत नस्लों के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या उपाय किए जा रहे हैं ; और

(छ) क्या यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि भारत की जलवायु तथा अन्य परिस्थितियों के कारण हमारी स्वदेशी नस्लों में रोग प्रतिरोधी क्षमता अधिक होती है और इसलिए ये विदेशी संकर नस्लों की अपेक्षा उपयोगी है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अरविन्द नेताम) : (क) जी, नहीं ।

(ख) प्रश्न में उल्लिखित नस्लें अर्थात् आलमबादी, बिगापुरी, खटियाली, पुल्लिकुल्लम और बांगरको भारत सरकार/भा. कृ. अ. परिषद् के किसी भी प्रकाशन में नस्ल/प्रजातियों के रूप में सूचीबद्ध नहीं किया गया है।

(ग) शून्य ।

(घ) जी, हां । मान्यताप्राप्त स्वदेशी गोवंश नस्लों की विशेषताए सरकार/भा०कृ०अ०प० के प्रकाशनों में वर्णित हैं ।

(ङ) इनके विवरण नीचे उल्लिखित प्रकाशनों में उपलब्ध हैं :

1. भा. कृ. अ. प. (1945) भारत, भारतीय कृषि में पालतू बना ली गई विभिन्न नस्लों तथा किस्मों की नामावली।

2. भा. कृ. अ. प. (1979) गोवंश तथा भैंस नस्लों की विशेषताए ।

3. भा. पशुचिकित्सा अ. प. 1984 भारत में पशुधन तथा कुक्कुट आनुवांशिक संसाधन, लेखक–आर. एम. आचार्य तथा पी. एम. भट्ट ।

4. राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान (1981) भारत में पशु आनुवांशिक संसाधन –लेखक पी. एन. भट्ट ई.टी. ए. एल. ।

5. विस्तार निदेशालय, खाद्य तथा कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली के विस्तार कर्मियों के लिए पशुपालन नियम पुस्तिका––लेखक हरबंस सिंह ।

6. कुक्कुट सहित पशुधन, भारत की सम्पत्ति, भाग–6 प्रकाशन तथा सूचना निदेशालय, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ।

(च) इन नस्लों के संरक्षण की दिशा में सरकार ने निम्नलिखित उपायों के निर्देश दिए हैं :

1. गोपशु तथा भैंस फार्मों की स्थापना ।

2. चुनिंदा प्रजनन सहित संबंधित प्रजनन क्षेत्रों में हिमित वीर्य के उत्पादन और वितरण के लिए शुद्ध स्वदेशी प्रजनन सांडों का रखरखाव और वीर्य प्रशीतन और कृत्रिम गर्भाधान के लिए उप-संरचना की स्थापना पर बल देते हुए स्वदेशी नस्लों के लिए प्रजनक नीति का प्रतिपादन करना ।

3. आठवीं योजना के दौरान स्वदेशी नस्लों के विकास और संरक्षण के लिए "राष्ट्रीय सांड उत्पादन कार्यक्रम" नामक एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना विचाराधीन है । नस्लवार पशुधन की संगणना करने का प्रस्ताव विचाराधीन है ।

(छ) आम तौर पर, स्वदेशी पशुधन की नस्लें भारतीय जलवायु की परिस्थितियों में बेहतर रूप से अपनाई जाती है ।

उर्वरकों के उपयोग में कमी

7150. **श्रीमती सुषमा स्वराज** : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि देश में पिछले कुछ वर्षों से उर्वरकों के उपयोग में निरन्तर कमी हुई है ;

(ख) यदि हां, तो 1991–92, 1992–93 और 1993–94 के वर्षों के दौरान विभिन्न उर्वरकों की कितनी मात्रा का उपयोग किया गया ;

(ग) क्या देश में उर्वरकों के उपयोग के लिए इसकी मांग को स्वदेशी उत्पादन द्वारा ही पूरा कर लिया गया था ;

(घ) यदि नहीं, तो उपर्युक्त वर्षों के दौरान देश में प्रत्येक उर्वरक का कितनी मात्रा में उत्पादन हुआ तथा कितनी मात्रा में प्रत्येक उर्वरक का आयात किया गया ;